International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

यूपी की राजनीति और लोहिया–आंबेडकर: एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. केशरी नन्दन मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय पी.जी. कालेज, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर और राममनोहर लोहिया ये दो नाम भारतीय राजनीति में कई मायने में एक–सी तासीर रखते हैं। जीवनकाल में इन दोनों को सीमित राजनीतिक सफलताएं मिलीं। बाबा साहब लोकसभा चुनाव कभी नहीं जीत पाए। लोहिया भी सिर्फ एक बार सासंद बन पाए। दोनों को सत्ता में होने का मौका या तो नहीं मिला या बेहद सीमित मौका मिला। दोनों ही दरअसल चिरंतन प्रतिपक्ष रहे। यह प्रतिपक्ष सिर्फ राजनीति में नहीं, बल्कि भारतीय समाज के स्तर पर भी रहा। ये दोनों नेता मरने के बाद और ज्यादा प्रासंगिक होते चले गये और आज भारतीय राजनीति की कोई भी चर्चा इनको केंद्र में रखे बिना नहीं हो सकती। जहां आंबेडकरवाद की सर्वव्यापी चर्चा है, वहीं लोहियावादी धारा का खासकर उत्तर भारतीय राजनीति पर गहरा असर रहा है। लोहियावाद ने पिछड़ी और मझोली जातियों को सत्ता के केन्द्र में लाकर भारतीय समाज और राजनीति को लोकतांत्रिक बनाया है। खुद को आंबेडकरवादी और लोहियावादी कहने वाली पार्टियाों ने उत्तर भारत के दो बड़ो राज्यों उत्तर प्रदेश और बिहार की राजनीति पर या तो राज किया, या प्रमुख विपक्ष की भूमिका निभाई है। कई और राज्यों में भी इनका असर है।

लोहिया और आंबेडकर के बारे में यह तथ्य दिलचस्प है कि दोनों का राजनीतिक

e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

जीवन लगभग एक साथ चला। लेकिन आश्चर्यजनक है कि भारत के ये दो प्रमुख नेता कभी आपस में मिल नहीं पाएं। ऐसा नहीं है कि दोनों के बीच भौगोलिक दूरी थी। दरअसल उनके बीच साम्य की तलाश इतनी देर में शुरू हुई कि दोनों जब मिलना चाहते थे, तब बाबा साहब परिनिर्वाण की ओर बढ़ रहे थे। देर हो चुकी थी। 1956 में प्रस्तावित इन दोनों की मुलाकात कभी हो नहीं पाई। इस तरह लोहिया और आंबेडकर का साझा चिंतन, जो देश की राजनीति और समाज की तस्वीर बदलने में शायद सक्षम होता, कभी जमीन पर उतर ही नहीं पाया। सबसे दुखद यह है कि यह जोड़ी बनते–बनते बिखर गई।

बहरहाल इतिहास की अपनी गति होती है और मनोगत भावों से चीजें नहीं चलतीं। अगर समानताओं की बात करें तो लोहिया और आंबेडकर कई मुद्दों पर बेहद पास नजर आते हैं दोनों के पास विश्वदृष्टि थी और भारतीय राष्ट्र के बारे में दोनों ने चितंन किया हैं लेकिन लोहिया और आंबेडकर दोनों भारत में निम्नवर्णीय–निम्नवर्गीय प्रसंग में ही याद किये जाते है। और यह गलत भी नहीं हैं। ये दोनों नेता संपूर्ण राष्ट्र के लिये चिंतन करते हुए भारत की जाति मुक्त को एक अनिवार्य कार्यभार की तरह लेते हैं और मानते है कि जाति के अंत के बिना भारत का विकास नहीं हो सकता। लोहिया अपनी किताब भारत में जातिवाद और आंबेडकर अपनी किताब एनिहिलेशन ऑफ कास्ट में यह व्याख्या देते हैं कि जन्म के आधार पर पेशों के निर्धारण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गतिहीन बना दिया है। दोनों की राय में जाति अनैतिक है और उसका अंत हो जना चाहिए। स्त्री मुक्ति के सवाल पर भी लोहिया और आंबेडकर काफी करीब हैं।

लोहिया और आंबेडकर की चिंतन प्रक्रिया पर विचार करते समय दोनों की

e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

पृष्ठभूमियों को ध्यान में रखना उपयोगी होगा। दोनों ही आधुनिक चिंतक हैं और दोनों ही भारत को आधुनिक राष्ट्र के तौर पर देखने के इच्छुक रहे। समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के विचारों से दोनों प्रभावित रहे। लेकिन जहां आंबेडकर जाति व्यवस्था में सबसे नीचे की पायदान से आने के कारण जाति को लेकर बेहद कटु हैं, और धर्मशास्त्रों को इसके लिए जवाबदेह मानकर उन्हें जला डालने की बात करते हैं। वहीं लोहिया उत्तर भारतीय व्यवसायी जाति से आते हैं। वे जाति का अंत चाहते हैं, लेकिन इसके लिये वे धर्म का विनाश नहीं चाहते। जाति मुक्ति का सवाल आंबेडकर के लिये सबसे महत्वपूर्ण है। भारत की आजादी से भी ज्यादा महत्वपूर्ण। वहीं लोहिया जाति मुक्ति को जरूरी मानते हुए भी स्वतंत्रता आंदोलन को ज्यादा महत्व देते हैं।

जहां आंबेडकर धर्म और शास्त्र को जाति का आधार मानते हैं, वहीं लोहिया जाति धर्म की बुराई मानते हैं। इस बिन्दु पर लोहिया अपने गुरू महात्मा गांधी के साथ खड़े हैं। लोहिया निजी जीवन में नास्तिक है, लेकिन राजनीतिक और सामाजिक तौर पर वह धर्मसुधारक हैं। बाबा साहेब नहीं मानते कि हिन्दू कभी सुधर सकते हैं और जाति से मुक्ति पा सकते हैं, इसलिए वह 1936 में ही हिंदू धर्म छोड़ने की घोषणा करते हैं और 1956 में ही हिंदू धर्म छोड़ने की घोषणा करते हैं और 1956 में हिंदू धर्म त्याग कर विधिवत बौद्ध बन जाते हैं।

दोनों के बीच समानताएं इतनी अधिक हैं कि दोनों को अलग–अलग नहीं देखा जाना चाहिए। ऐसा करने वाले आंबेडकरवादियों और लोहियावादियों ने अपनी एकांगी सोच का ही परिचय दिया है और इसका नुकसान दोनों को हुआ। व्यावहारिक राजनीति के तौर पर देखें तो सपा और बसपा में 1995 के बाद से

e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

2017 तक यानी 22 साल तक जो कड़वाहट रही, उसने भारतीय राजनीति में एक अभिन्न प्रयोग की संभावना को नष्ट कर दिया। अगर खुद को लोहियावादी और आंबेडकरवादी कहने वाली दो पार्टियों में कामकाजी एकता होती, तो देश की राजनीति की शक्ल शायद कुछ और होती। जहां सपा पिछड़ी जातियों की पार्टी बन गई, वहीं बसपा अपने मूल आधार यानी दलित वाटों तक सिमट गई। दोनों का अपना आधार सत्ता तक पहुंचने के लिये काफी नहीं था, इसलिये दोनों दलों ने राजनीतिक और सामाजिक गठबंधन किये और अपने मूल विचार के साथ इतने समझौते किये कि इन दलों को पहचानना मुश्किल हो गया कि वे आंबेडकरवादी और लोहियावदी पार्टियां हैं।

2018 में ये पार्टियां एक बार फिर पास आती दिख रही हैं। अगर यह सिर्फ सत्ता के लिये दो दलों का पास आना है, तो फिर इसकी मीमांसा करने का भी कोई मतलब नहीं है। अगर वे विचार के स्तर पर करीब हो रही हैं, तो जो सबसे पहला काम दोनों दलों के नेताओं को करना चाहिए वह यह कि लोहिया और आंबेडकर को पढ़ें और उससे भी ज्यादा उनके विचारों पर अमल करें। आंबेडकर और लोहिया के साझा विचारों में आधुनिक भारत का एक अभिनव सपना छिपा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डागर, डॉ0 बी0एस0(1992)–शिक्षा तथा मानव मूल्य, चंडीगढ़, हरियाणा साहित्य अकादमी।
2. जोयिस, न्यायमूर्ति एम0राम0 (1997) मानव अधिकार तथा भारतीय मूल्य, नई दिल्ली, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद।
3. राय, प्रकाश चन्द्र–भारत के अग्रणी समाज सुधारक, नई दिल्ली, सेंचुरी पब्लिकेशन्स

e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

4. राष्ट्रीय प्रतीक, सेन्ट्रल फार कल्चरल रिसोर्स एण्ड ट्रेनिंग, 15ए द्वारका, सेक्टर–7, नई दिल्ली।

5 लाल, रमन बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, रस्तोगी पब्लिकेशंस, मेरठ

6 सक्सेना, एन0आर0स्वरूप, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, आर0लाल0 बुक डिपो, मेरठ

7 पाण्डेय, रामसकल, प्रमुख शिक्षा शास्त्रीय